अभिमन्यु आदि पौत्रों तक वहाँ एकत्रित सारे कौरव तथा पृथ्वी के अन्य सब राजा भी काल-कवलित होने वाले हैं। पुत्रों की कुनीति को उत्साहित करने के लिए राजा धृतराष्ट्र पर ही इस महाविपत्ति का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व है।

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलोऽभ्यनुनादयन्।।१९।।

सः=उस; **घोषः**=शब्द ने; **धार्तराष्ट्राणाम्**=धृतराष्ट्र पुत्रों के; **हृदयानि**=हृदयों को; **व्यदारयत्**=विदीर्ण कर दिया; **नभः**=आकाश; **च**=तथा; **पृथिवीम्**=पृथ्वी को; **च एव**=भी; **तुमुलः**=भयंकर रूप से; **अभ्यनुनादयन्**=प्रतिध्वनि से परिपूरित करते हुए।

अनुवाद

शंखों के उस तुमुल घोष ने आकाश तथा पृथ्वी को शब्दायमान करते हुए धृतराष्ट्रपुत्रों के हृदय को विदीर्ण कर दिया।।१९।।

तात्पर्य

दुर्योधन के पक्षपाती भीष्म आदि योद्धाओं के शंखनाद का पाण्डवों पर कुछ भी प्रभाव पड़ा हो, ऐसी किसी घटना का वर्णन नहीं हुआ है। परन्तु इस श्लोक में स्पष्ट उल्लेख है कि पाण्डव-सैन्यसंकुल के शंखनाद से धृतराष्ट्रपुत्रों के हृदय विदीर्ण हो गए। इसमें हेतु है पाण्डवों का अपना पराक्रम और इससे भी अधिक, भगवान् श्रीकृष्ण में उनका अटूट विश्वास। इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण के शरणागत भक्तों के लिए परम विपत्ति में भी भय का कोई कारण नहीं हो सकता।

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः।
हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।।२०।।

अथ=उसके उपरान्त; **व्यवस्थितान्**=स्थित हुए; **दृष्ट्वा**=देखकर; **धार्तराष्ट्रान्**=धृतराष्ट्रपुत्रों को; **कपिध्वजः**=श्रीहनुमान् जी से युक्त ध्वजा वाले; **प्रवृत्ते**=कटिबद्ध हुआ; **शस्त्रसंपाते**=बाण चलाने के लिए; **धनुः**=धनुष; **उद्यम्य**=हाथ में लेकर; **पाण्डवः**=पाण्डुपुत्र अर्जुन ने; **हृषीकेशम्**=भगवान् श्रीकृष्ण से; **तदा**=उस समय; **वाक्यम्**=वचन; **इदम्**=ये; **आह**=कहे; **महीपते**=हे राजन्।

अनुवाद

हे राजन्! उस समय श्रीहनुमान्-चिन्ह से युक्त ध्वजा वाले अपने रथ में स्थित पाण्डुपुत्र अर्जुन धृतराष्ट्र पुत्रों को देखता हुआ धनुष धारण कर बाण चलाने के लिए कटिबद्ध हुआ। हे राजन्! उसी समय अर्जुन ने भगवान् हृषीकेश (श्रीकृष्ण) से ये वचन कहे।।२०।।